INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

जनपद गोण्डा में ग्रामीण व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन
(Study of Rural Business Pattern in Gonda District)

आनन्द स्वरूप पाण्डेय
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह,
मुरैना (मध्यप्रदेश, भारत)
E-mail: anandpandey722@gmail.com

डॉ. अभिषेक सिंह
सहायक अध्यापक,
एम.जी.एम. इण्टर कालेज, ढिकौली,
बागपत (उत्तरप्रदेश, भारत)
E-mail: abhishshsh@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/02.2022-35452246/IRJHIS2202015

सारांश :

गांवों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और स्वावलम्बी बनाने में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः मानव चाहे पृथ्वी के किसी भी भू–भाग में निवास करता हो उसे जीवन यापन हेतु मूलभूत सुविधाओं की आवश्यकता होती है, उसके इन जरूरतों की आपूर्ति क्षेत्रीय व्यावसायिक संरचना से सम्भव हो पाती है। वहाँ की व्यावसायिक संरचना अधिकांशतः स्थानीय संसाधनों पर निर्भर होती है।

मुख्य शब्द : जनसंख्या, कृषक, कृषि श्रमिक, पारिवारिक उद्योग तथा अन्य कर्मकार।

परिचय :

व्यवसाय से तात्पर्य किसी व्यक्ति के जीवन यापन हेतु उसकी कार्यशैली से है जो उसे भिन्न–भिन्न पेशा अथवा कार्य प्रणाली में वर्गीकृत करती है अर्थात् मानव अपने जीवकोपार्जन के लिए जो भी क्रिया करता है उसे व्यवसाय कहते हैं। व्यावसायिक संरचना से ही किसी ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा उसकी आर्थिक स्थिति का बोध होता है कि उक्त क्षेत्र कृषि प्रधान अथवा उद्योग प्रधान है। व्यावसायिक संरचना ही व्यक्ति की व्यावसायिक स्थिति, उसके रूझान, सामाजिक दृष्टिकोण एवं राजनीतिक सम्बद्धता आदि तत्वों को प्रकट करता है। अतः व्यावसायिक संरचना ही किसी क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या की व्यावसायिक और औद्योगिक संरचना तथा उसकी क्षेत्रीय कालिक परिवर्तनशील प्रवृत्ति का भौगोलिक अध्ययन एवं सामाजिक–आर्थिक संरचना में हुए परिवर्तनों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करने में सहायक होता है।

उद्देश्य :

- प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण व्यावसायिक संरचना में ग्रामीण जनसंख्या की सामाजिक–आर्थिक स्थिति

को स्पष्ट करना।

- ग्रामीण व्यावसायिक संरचना के प्रगति में बाधक तत्वों का पता लगाना।

विधि तंत्र :

प्रस्तुत शोध प्रपत्र गोण्डा जनपद में व्यावसायिक संरचना एवं वितरण से सम्बन्धित है जो मुख्यतः द्वितीय आंकड़ों पर आधारित हैं जिसमें प्रयुक्त आंकड़े जिला सांख्यिकीय पत्रिका, गोण्डा एवं भारतीय जनगणना सर्वेक्षण विभाग द्वारा लिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :

भारतीय गणराज्य के उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी उत्तर–मध्य भाग में सरयू (घाघरा) नदी के उत्तर में गोण्डा जनपद देवीपाटन मण्डल का हिस्सा है। इसका अक्षांशीय विस्तार $26^0$47′ उत्तरी अक्षांश से $27^0$20′ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार $81^0$30′ पूर्वी देशांतर से $82^0$46′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिसके उत्तर में बहराइच एवं बलरामपुर जनपद, दक्षिण में अयोध्या जनपद, पूर्व में बस्ती एवं पश्चिम में बाराबंकी जनपद अवस्थित है। (मानचित्र संख्या–1) गोण्डा जनपद का सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 4003 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें 3949.40 वर्ग किमी ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत एवं 53.60 वर्ग किमी नगरीय क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। प्रशासनिक दृष्टि से गोण्डा जनपद में 4 तहसीलें, 16 विकासखण्ड, 166 न्याय पंचायत, 1054 ग्राम पंचायत एवं 1814 राजस्व ग्राम हैं। गोण्डा जनपद की कुल जनसंख्या 3402376 है, जिसमें 1772007 पुरुष और 1633369 महिलाएँ हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल ग्रामीण जनसंख्या 3209542 एवं नगरीय जनसंख्या 195834 है (जनगणना 2011)।

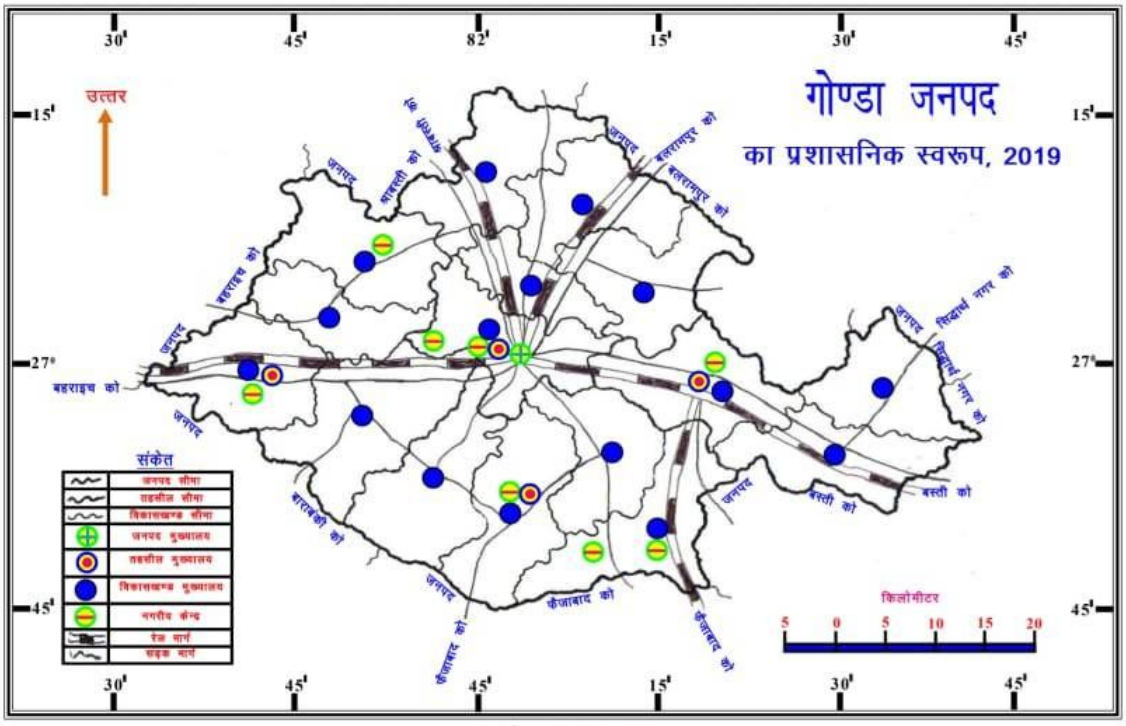

मानचित्र संख्या – 01

गोण्डा जनपद में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना :

व्यावसायिक स्वरूप सामाजिक व आर्थिक परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व हैं, क्योंकि इससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की जीविकोपार्जन की स्थिति का पता चलता है। जिससे विभिन्न कार्यों में लगे

लोगों की संख्या का प्रतिशत तथा क्षेत्रीय विकास की अवस्था का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर के उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका संख्या–1

गोण्डा जनपद में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना

वर्ष	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक श्रमिक	अन्य श्रमिक	सीमान्त कृषक
1991	523519	84243	2998	79564	98544
2001	478984	92040	18351	107848	241871
2011	353907	200102	36117	147568	430978

स्रोत : जिला साख्यिकीय पत्रिका, गोण्डा–2020

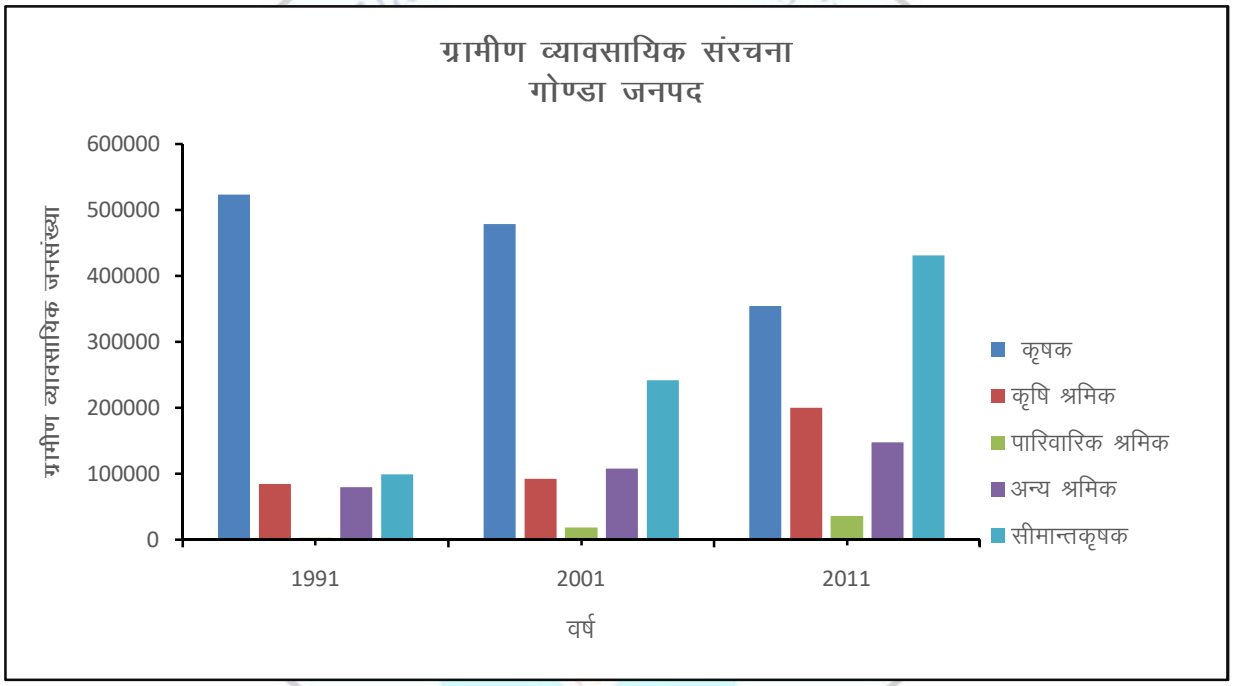

तालिका संख्या–2

गोण्डा जनपद में विकास खण्डवार ग्रामीण व्यावसायिक संरचना–2011

वर्ष	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक श्रमिक	अन्य श्रमिक	सीमान्त कृषक
रूपईडीह	30205	15234	2497	7304	30649
इटियाथोक	24770	13579	2438	5369	20065
पंडरीकंपाल	12460	8148	2071	6143	19034
झंझरी	17478	10733	1734	14156	30472

मुजेहना	25503	12505	2119	6742	24185
कटरा बाजार	25430	17045	2652	6583	30469
हलधर मऊ	13333	13386	2108	6885	28429
करनैलगंज	25639	13106	1262	5198	19784
परसपुर	21355	13041	2261	8112	33882
बेलसार	24767	12782	1723	7300	21264
तरबगंज	18831	8918	895	4335	17811
वजीरगंज	21565	10293	1964	5614	23356
नवाबगंज	19267	10954	1776	5349	24572
मनकापुर	25667	14443	3083	9734	32902
बभनजोत	25270	12003	1055	5132	30809
छपिया	20701	8850	1441	5624	28841

स्रोत : जिला साख्यिकीय पत्रिका, गोण्डा–2020

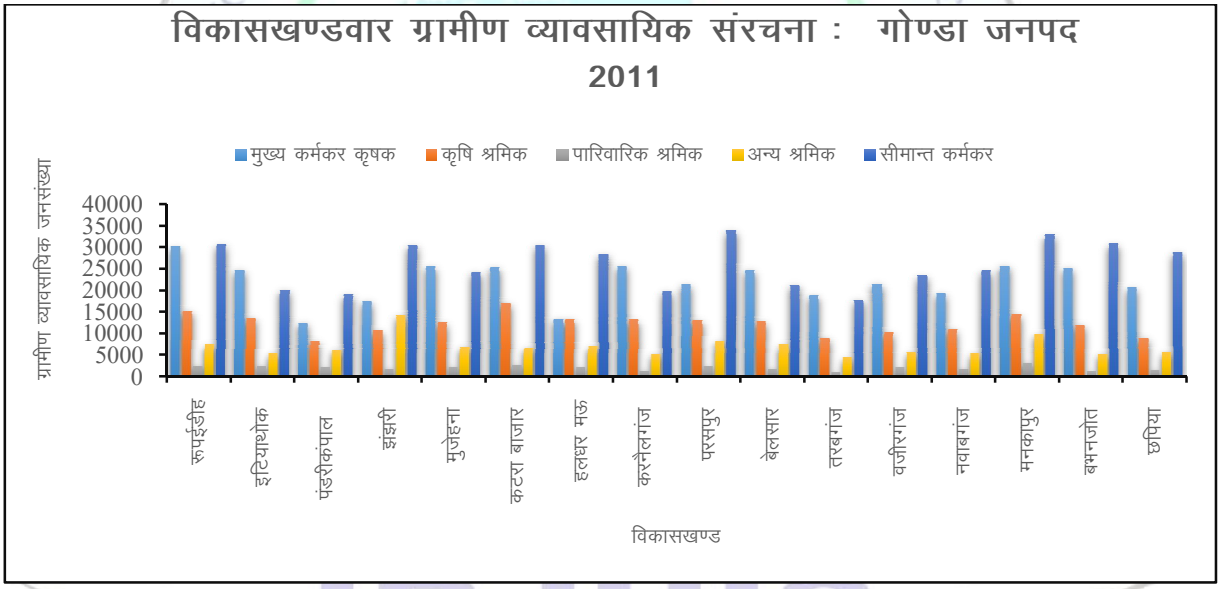

अध्ययन क्षेत्र में कुल मुख्य कर्मकरों की जनसंख्या, जो जनपद की सम्पूर्ण जनसंख्या का मात्र 21.68 प्रतिशत है। इस प्रकार शेष 78.32 प्रतिशत जनसंख्या इन पर निर्भर हैं। जिसका प्रमुख कारण कृषि के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में यहाँ रोजगार की सुविधाएँ बहुत कम है। कार्य की अवधि के आधार पर भारत की जनसंख्या को तीन वर्गों – मुख्य कर्मकर (कृषक, कृषि श्रमिक, पारिवारिक उद्योग, अन्य) सीमांत कर्मकर और गैर कर्मकर के रूप में विभाजित हैं (तालिका संख्या–1 एवं 2, चित्र संख्या–1 एवं 2)।

कृषक :

स्वयं की भूमि अथवा किसी अन्य से भूमि लेकर उस पर कृषि कार्य करने वाले व्यक्ति को कृषक कहते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कृषक जनसंख्या रूपईडीह विकासखण्ड (30205) पायी गयी है इसके पश्चात

क्रमशः मनकापुर (25667), करनैलगंज (25639), कटरा बाजार (25430), बभनजोत (25270), इटियाथोक (24770), बेलसार (24767), वजीरगंज (21565), परसपुर (21355), छपिया (20701), नवाबगंज (19267), तरबगंज (18831), झंझरी (17478), हलधर मऊ (13333) एवं सबसे कम कृषक जनसंख्या पंडरीकृपाल विकासखण्ड (12460) में पायी गयी है। अध्ययन क्षेत्र में कृषक कुल जनसंख्या के 10.40 प्रतिशत हैं एवं जनपद में कुल 523519 जनसंख्या 1991 में कृषक के रूप में कार्यरत थी, जबकि 2011 में मात्र 353907 जनसंख्या ही कृषक के रूप में कार्यरत है अतः विगत् दो दशकों में कृषक जनसंख्या में 67.60 प्रतिशत की भारी कमी आयी जिसका प्रमुख कारण निम्नवत् है –

- जनसंख्या वृद्धि के साथ जोत का आकार छोटा होना।
- फसल लागत दर अधिक होना जबकि उत्पादन मूल्य के आधार पर उचित मूल्य नहीं प्राप्त होना।
- तकनीकी कृषि का समुचित विकास नहीं हो पाना।
- कृषि के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में रोजगार प्राप्त होना।

कृषि श्रमिक :

कृषि श्रमिकों के पास जोत योग्य भूमि की कमी होती है वे दूसरों की भूमि पर मजदूरी करके अपना भरण–पोषण करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कृषि श्रमिक कटरा बाजार विकासखण्ड (17045) में पाये गये हैं। इसके बाद क्रमशः रूपईडीह (15234), मनकापुर (14443), इटियाथोक (13579), हलधर मऊ (13386), करनैलगंज (13106), परसपुर (13041), बेलसार (12782), मुजेहना (12505), बभनजोत (12003), नवाबगंज (10954), झझरी (10733), वजीरगंज (10293), तरबगंज (8918), छपिया (8850) एवं सबसे कम पंडरीकृपाल, विकासखण्ड में (8148) कृषि श्रमिक पाये गये हैं। अध्ययन क्षेत्र में कृषि श्रमिक जनपद की कुल जनसंख्या के मात्र 5.88 प्रतिशत है तथा जनसंख्या की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में सन् 1991 में 84243 कृषि श्रमिक थे जबकि वर्ष 2011 में 42.10 प्रतिशत वृद्धि के साथ 200102 कृषि श्रमिक हो गये। इनकी संख्या में वृद्धि के निम्नलिखित कारण हैं–

- कृषि जोत का आकार कम होना।
- तीव्र जनसंख्या वृद्धि।
- कृषि कार्यों में मशीनों का प्रयोग।
- अधिक श्रम वाले कृषि की उपेक्षा।
- वर्ष में एक बार बोयी जाने वाली फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि।

परिवारिक श्रमिक :

इसके अन्तर्गत लघु एवं कुटीर उद्योगों में संलग्न लोगों को सम्मिलित किया जाता है, जिनमें अधिकांश लोग कृषि या अन्य पेशों के साथ कुछ गौण पेशे जैसे– खाने, पहनने, बर्तन, वस्त्र तथा गृह निर्माण आदि के कार्यों में शामिल होते हैं जिन्हें कुटीर उद्योग के अन्तर्गत रखा जाता है, जबकि लघु उद्योग के अन्तर्गत 50 से कम श्रमिकों को वेतन देकर वस्तु निर्माण का कार्य कराया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक पारिवारिक उद्योगों में संलग्न श्रमिक मनकापुर विकासखण्ड में (3083) है इसके पश्चात क्रमशः कटरा बाजार (2652),

रूपईडीह (2497), इटियाथोक (2438), परसपुर (2261), मुजेहना (2119), हलधरमऊ (2108), पंडरी कृपाल (2071), वजीरगंज (1964), नवाबगंज (1776), झंझरी (1734), बेलसार (1723), छपिया (1441), करनैलगंज (1262), बभनजोत (1055) जबकि तरबगंज विकासखण्ड में सबसे कम (895) पारिवारिक उद्योग में संलग्न श्रमिक हैं। अध्ययन क्षेत्र में पारिवारिक उद्योग में संलग्न श्रमिक क्षेत्र में उपलब्ध कुल जनसंख्या के मात्र 1.06 प्रतिशत है। जनसंख्या के परिप्रेक्ष्य में वर्ष 1991 में कुल पारिवारिक श्रमिक के रूप में 2998 व्यक्ति थे जबकि 2011 में 8. 30 प्रतिशत वृद्धि के साथ 36117 व्यक्ति पारिवारिक श्रमिक के रूप में कार्य कर रहे है अर्थात् पारिवारिक उद्योगों में संलग्न श्रमिक की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। जिसके निम्नवत् कारण हैं –

- औद्योगिक फसलों के प्रति आकर्षण।
- कृषि आधारित उद्योगों की बढ़ती मांग।
- तीव्र जनसंख्या वृद्धि।

अन्य कर्मकर :

कृषि एवं पारिवारिक उद्योगों में सम्मिलित व्यक्तियों के अतिरिक्त कार्यशील जनसंख्या को अन्य कर्मकर की श्रेणी में रखा जाता है। जिनका प्रमुख कार्य व्यापार, वाणिज्य, पशुपालन, मत्स्यन, फलोद्यान, शिक्षण कार्य, संग्रहण आदि में निहित है। अध्ययन क्षेत्र में अन्य कर्मकर कुल जनसंख्या के 4.34 प्रतिशत हैं। जिसके अन्तर्गत जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक अन्य कर्मकर झंझरी विकासखण्ड में (14156) हैं, इसके पश्चात् क्रमशः मनकापुर (9734), परसपुर (8112), रूपईडीह (7304), बेलसार (7300), हलधर मऊ (6885), मुजेहना (6742), कटरा बाजार (6583), पंडरी कृपाल (6143), छपिया (5624), वजीरगंज (5614), इटियाथोक (5369), करनैलगंज (5198) एवं अध्ययन क्षेत्र में सबसे कम अन्य श्रमिकों की संख्या बभनजोत विकासखण्ड में (5132) है। अध्ययन क्षेत्र में अन्य कर्मकर के रूप में वर्ष 1991 में 79564 व्यक्ति पाये गये, जबकि वर्ष 2011 में अन्य कर्मकरों की संख्या प्रतिशत वृद्धि के साथ उनकी संख्या 147568 व्यक्ति हो गया। इनकी वृद्धि के निम्नवत् कारण हैं –

- ग्रामीण क्षेत्रों में भी मनरेगा जैसी योजनाओं के कारण रोजगार में वृद्धि।
- आय प्राप्ति का उचित स्रोत होना।
- कृषि में प्रच्छन्न बेरोजगारी के कारण शहरों में रोजगार के अवसर उपलब्ध होना।
- अधिक आय देने वाले रोजगार के प्रति लोगों का आकर्षण।

सीमान्त कृषक :

सीमान्त कृषक के पास कृषि जोत की भूमि एक हेक्टेयर तक होती है। भारत में सीमान्त कृषकों की कुल आबादी कुल जनसंख्या की 68 फीसदी है। अध्ययन क्षेत्र में सीमान्त कृषक कुल जनसंख्या के 12.67 प्रतिशत हैं। जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक सीमान्त कृषक परसपुर विकासखण्ड (33882) में है। इसके बाद क्रमशः मनकापुर (32902), बभनजोत (30809), रूपईडीह (30649), झंझरी (30472), कटरा बाजार (30469), छपिया (28841), हलधरमऊ (28429), नवाबगंज (24572), मुजेहना (24185), वजीरगंज (23356), बेलसार (21264), इटियाथोक (20065), पंडरी कृपाल (19784), करनैलगंज (19034) एवं सबसे कम सीमान्त कृषकों की संख्या तरबगंज विकासखण्ड (17811) में है। अध्ययन क्षेत्र में सीमान्त कृषक के रूप में 1991 में 98544 व्यक्ति

पाये गये, जबकि 2011 में इनकी जनसंख्या 22.87 प्रतिशत वृद्धि के साथ 430978 हो गयी। इनकी वृद्धि के निम्नवत् कारण हैं –

- जनसंख्या वृद्धि
- एकल परिवार में वृद्धि
- महत्वाकांक्षा की भावना

निष्कर्ष :

अध्ययन क्षेत्र के विश्लेषण के उपरान्त यह तथ्य सामने आया है कि यहाँ कृषकों की संख्या सर्वाधिक है, इसके बाद सीमान्त कृषक आते हैं। तत्पश्चात् क्रमशः कृषि श्रमिक, अन्य श्रमिक एवं पारिवारिक श्रमिक आते हैं। अध्ययन क्षेत्र में इन श्रमिकों एवं कृषकों को मूलभूत सुविधाएँ प्रदान कर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के जवीन स्तर को ऊपर उठाया जा सकता है। जिससे उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और ग्रामीण जन–जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है।

सुझाव :

ग्रामीण व्यवसाय को सुदृढ़ बनाने हेतु निम्नवत् सुझाव हैं –

- अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध संसाधन के अनुकूल नियोजन करके स्थानीय व्यावसायिक संरचना को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया जाय।
- अध्ययन क्षेत्र में पारिवारिक उद्योगों की स्थिति अच्छी नहीं हैं जिसमें सुधार हेतु मूलभूत सुविधाओं से युक्त बिजली, पानी, पूँजी एवं तकनीक की समुचित व्यवस्था कराकर स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- लघु एवं कुटीर उद्योग के लिए प्रत्येक विकासखण्ड में उद्योग प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना किया जाना चाहिए।
- कृषि के प्रति लोगों की रूचि में अभिवृद्धि प्रदान करने हेतु अरूचि के कारणों का पता लगाकर उसका समाधान किया जाना चाहिए।
- अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों को लगाकर स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग किया जाना चाहिए।
- कृषि के साथ ही पशुपालन को व्यावसायिक स्वरूप प्रदान किया जाना चाहिए।
- उपलब्ध डेयरी उत्पादों के भण्डारण एवं विपणन की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
- निर्यातोन्मुख इकाईयों को विशेष वित्तीय सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।
- ग्रामीण अर्थतंत्र को समृद्ध बनाने हेतु कुक्कुट पालन, भेड़ पालन, बकरी पालन, मत्स्य पालन, बत्तख पालन, मधुमक्खी पालन आदि व्यवसायों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- सीमान्त कृषकों की संख्या में अभिवृद्धि को रोकने के समुचित उपाय किये जाने चाहिए।

उपरोक्त सुझावों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान परिवेश के अनुकूल ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का

विस्तार किया जाना चाहिए। जिससे ग्रामीण लोगों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके।

संदर्भ सूची :

1. कुमार रविन्द्र (2013) : जनपद कुशीनगर में सामाजिक–आर्थिक विकास में व्यापारिक कृषि की भूमिका, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध।

2. कुरूक्षेत्र (2016) : लिखी जा रही ग्रामीण क्षेत्र की नई इबारत, पृ. 5

3. खुल्लर डी.आर. (2018) : भारत का भूगोल, एम. सी. ग्रावहिल एजुकेशन (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई।

4. ओझा, शिवकुमार (2015) : जनसंख्या व नगरीकरण, बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज, पृ0 74–75

5. जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद–गोण्डा, 2020

6. तिवारी, आर. सी. (2020) : भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज, पृ0 402–3, 5,7

7. सिंह, जगदीश (2016) : आर्थिक भूगोल के मूलतत्व, पृ0 104